PROF. SUDHIR KUMAR JAIN

Prof. Sudhir Kumar Jain is an internationally reputed scholar of earthquake engineering and an accomplished institution builder. He is serving his third 5-year term as director of the Indian Institute of Technology Gandhinagar, which he joined as founder director in June 2009.

2. Born on 4th July, 1959 at Lalitpur (UP), Dr. Jain received his Bachelor of Engineering degree from the University of Roorkee (currently IIT Roorkee) in 1979 and his masters and PhD degrees from the California Institute of Technology Pasadena (CalTech), USA, in 1980 and 1983, respectively. He served on the faculty of IIT Kanpur for 35 years from 1984-2019, where he shouldered several important responsibilities including as head of the Department of Civil Engineering (2001-2003), and Dean, Resource Planning and Generation (2005-2008).

3. Prof. Jain has made major contributions to earthquake engineering education, research, and practice with a focus on needs of India and other developing countries. Under his leadership, IIT Kanpur emerged as a leading institution in the country for earthquake engineering. He taught and inspired generations of students at IIT Kanpur. He has published more than 150 scholarly journal articles. His research interests include seismic design codes, earthquake resistant design of concrete structures, seismic design of bridges, building dynamics, and post-earthquake studies. He was the lead developer of several important seismic codes in India that impact much of the design and construction of buildings and bridges in the country. He has served as consultant for numerous large projects, such as major bridges (on Brahamputra and Ganga) and petrochemical pipelines.

4. Prof. Jain's work on capacity building in earthquake safety has been much admired. He trained thousands of professional engineers and college educators in earthquake engineering through his continuing education programmes. He established the National Information Centre of Earthquake Engineering (NICEE) at IIT Kanpur and raised substantial endowment funds for the Centre. He developed and managed a highly successful National Programme on Earthquake Engineering Education (NPEEE) with funding from the Government of India (2003 to 2007).

5. Prof. Jain assumed charge as the founding director of IIT Gandhinagar in 2009. Under his leadership, IIT Gandhinagar has introduced several innovations in curriculum, student affairs, faculty recruitment and institutional management to inculcate and promote excellence by faculty and students. Dr. Jain also led the development of its campus, in Palaj, Gandhinagar, which has won several national awards and is the first campus in India to receive the 5-star GRIHA-LD rating.

6. Prof. Jain served as President of the International Association for Earthquake Engineering from 2014-18. He was elected Fellow of the Indian National Academy of Engineering in 2003, and conferred Life Membership by the New Zealand Society for Earthquake Engineering (NZSEE) in 2013. In 2015, he delivered fifteenth Mallet Milne Lecture in London on invitation of Society for Earthquake and Civil Engineering Dynamics UK; the only person from Asia to have delivered this lecture till date.

प्रो. सुधीर कुमार जैन

. प्रो. सुधीर कुमार जैन भूकंप इंजीनियरी के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित विद्वान और एक कुशल संस्था निर्माता हैं। वह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गांधीनगर के निदेशक के रूप में अपने तीसरे पांच वर्षीय कार्यकाल को पूरा कर रहे हैं। वह जून, 2009 में बतौर संस्थापक निदेशक नियुक्त हुए थे।

2. 4 जुलाई, 1959 को ललितपुर (उत्तर प्रदेश) में जन्मे डॉ. जैन ने 1979 में रुड़की विश्वविद्यालय (वर्तमान में आईआईटी रुड़की) से इंजीनियरी की स्नातक की डिग्री प्राप्त की और 1980 और 1983 में अमेरिका के कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी पासाडेना (कैलटेक) से क्रमशः अपनी स्नातकोत्तर और पीएच.डी की डिग्री हासिल की। उन्होंने 1984–2019 तक 35 वर्ष आईआईटी कानपुर की फैकल्टी में काम किया, जहां उन्होंने सिविल इंजीनियरी विभाग (2001–2003) के अध्यक्ष तथा रिसोर्स प्लानिंग एंड जेनरेशन (2005–2008) के डीन के रूप में कई अहम जिम्मेदारियों को निभाया ।

3. प्रो. जैन ने भारत और अन्य विकासशील देशों की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करते हुए भूकंप इंजीनियरी शिक्षा, अनुसंधान और प्रक्रिया में प्रमुख योगदान दिया है। उनकी अगुआई में आईआईटी कानपुर भूकंप इंजीनियरी में देश के अग्रणी संस्थान के रूप में उभरा। उन्होंने आईआईटी कानपुर में विद्यार्थियों की कई पीढ़ियों को पढ़ाया और उन्हें प्रेरित किया। उनके 150 से अधिक विद्वतापूर्ण लेख प्रकाशित हुए हैं। उनके शोध के दिलचस्पी वाले विषयों में भूकंपीय डिजाइन कोड, कंक्रीट के ढांचों का भूकंपरोधी डिजाइन, पुलों के भूकंपीय डिजाइन, भवन पहलू तथा भूकंप के बाद का स्थिति अध्ययन शामिल हैं। वह भारत में कई महत्वपूर्ण भूकंपीय कोड के प्रमुख डेवलपर थे जिनका देश में इमारतों और पुलों के डिजाइन और निर्माण में लाभ हुआ है। उन्होंने प्रमुख पुल (ब्रह्मपुत्र और गंगा नदी पर) और पेट्रोकेमिकल पाइपलाइन जैसी अनेक बड़ी परियोजनाओं के सलाहकार के रूप में कार्य किया है।

4 भूकंप सुरक्षा में क्षमता निर्माण को लेकर डॉ. जैन के कार्य की काफी प्रशंसा हुई है। उन्होंने अपने अनवरत शिक्षा कार्यक्रमों के जरिए भूकंप इंजीनियरिंग में हजारों पेशेवर इंजीनियर और कॉलेज शिक्षक को प्रशिक्षित किया। उन्होंने आईआईटी कानपुर में नेशनल इन्फॉर्मेशन सेंटर ऑफ अर्थक्विक इंजीनियरिंग (एनआईसीईई) की स्थापना की और इस केंद्र के लिए पर्याप्त एंडोमेंट फंड जुटाया। उन्होंने भारत सरकार के वित्तपोषण से भूकंप इंजीनियरी शिक्षा पर एक बेहद सफल राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीईईई) (2003 से 2007) तैयार किया और उसका प्रबंधन किया।

5. प्रो. जैन ने 2009 में आईआईटी गांधीनगर के संस्थापक निदेशक के रूप में कार्यभार संभाला। आईआईटी गांधीनगर ने, उनकी अगुआई में, शिक्षकों और छात्रों में उत्कृष्टता की भावना पैदा करने और उसे बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम, छात्र मामलों, संकाय भर्ती और संस्थागत प्रबंधन पर कई नवाचारों की शुरुआत की है। डॉ. जैन ने गांधीनगर के पालाज में इसके परिसर के विकास की भी अगुवाई की। इस परिसर को अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं और यह 5–सितारा गृह–एलडी रेटिंग अर्जित करने वाला भारत का पहला परिसर है।

6. प्रो. जैन ने 2014–18 के दौरान, इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर अर्थक्विक इंजीनियरिंग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वह 2003 में इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग के फेलो चुने गए और 2013 में उन्हें न्यूजीलैंड सोसायटी फॉर अर्थक्विक इंजीनियरिंग (एनजेडएसईई) द्वारा आजीवन सदस्यता प्रदान की गई। 2015 में, उन्होंने सोसाइटी फॉर अर्थक्विक एंड सिविल इंजीनियरिंग डायनेमिक्स यूके के निमंत्रण पर लंदन में पंद्रहवां मैलेट मिल्ने व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान देने वाले वह एशिया के एकमात्र व्यक्ति हैं।